# हाइडि

योहान्ना स्पाईरी

## लेखक के सम्बन्ध में

योहान्ना स्पाईरी का जन्म ज़ुरीच, स्विट्ज़रलैंड में 1827 में हुआ था. उनके पिता डॉक्टर थे और माँ एक कवियित्री थीं. उनका विवाह एक वकील के साथ हुआ था. उन्होंने अपना अधिकतर समय जुरिख में बिताया, जो एक बहुत ही सुंदर शहर है.

योहान्ना स्पाईरी ने कई किताबें लिखीं, लेकिन उनकी सब से प्रसिद्ध पुस्तक 'हाइडि' है जिसे 1881 में प्रकाशित किया गया था. इसका अनुवाद कई भाषाओं में किया गया है और संसार के हज़ारों बच्चों ने इसका आनंद उठाया है.

'हाइडि' एक ऐसी प्रसन्नचित्त लड़की की कहानी है जिसे जीवन की छोटी-छोटी साधारण बातें बहुत ख़ुशी देती हैं. आज के समय में, जब सब कुछ उलझन से भरा हुआ है, यह कहानी बहुत ही सार्थक है.

योहान्ना स्पाईरी का निधन 1901 में हुआ.

# हाइडि

योहान्ना स्पाईरी

हाइडि एक छोटी सी स्विस लड़की थी. जब वह नन्हीं बच्ची थी तब उसके माता-पिता का निधन हो गया था. वह अपनी मौसी डेटि के साथ रहती थी. एक दिन, जब वह पाँच वर्ष की थी, हाइडि और मौसी पहाड़ पर चलते-चलते डौरफ्लि गाँव की ओर आये.

गाँव में डेटि को अपनी मित्र बरबेल मिली.
यह तुम हो, डेटि? यह तुम्हारी बहन की बेटी है? इसे कहाँ ले जा रही हो?
हां, यह हाइडि है. मैं इसे इसके दादा पास ले जा रही हूँ.

उस बूढ़े सन्यासी के पास जो पहाड़ पर रहते हैं? ओह, डेटि!
मुझे फ्रैंकफर्ट में अच्छी नौकरी मिली है. मैं इसे साथ नहीं ले जा सकती!

लेकिन वह न कहीं आते-जाते हैं, न किसी से मिलते हैं. वह तो चर्च भी नहीं जाते.

जब भी वह नीचे गाँव में आते हैं, सब उनसे डरते हैं!

वह इसके दादा हैं , उन्हें इसकी देखभाल करनी ही होगी!
मुझे तो बच्ची पर तरस आ रहा है!

ओह, अब वह कहाँ चली गई?
वहां ऊपर, पीटर और उसकी बकरियों के साथ!

*पीटर बकरियों को पहाड़ के ऊपर ले जाता था ताकि वहां वह ताज़ा हरी घास खा सकें. हाइडि उसके साथ चली गई. डेटि और बरबेल उसी रास्ते पर पीछे-पीछे चल पड़ीं.*
लेकिन तुम कहाँ जा रही हो? हम पहाड़ पर आधे रास्ते तक आ गए हैं?
मुझे पीटर की माँ के साथ कुछ काम है. तुम जानती हो, वह ऊपर रहते हैं.

कितनी खराब जगह है!
ऊपर तो स्थिति और भी खराब है. तुम्हें और हाइडि को मेरी शुभकामनायें!

*डेटि ने हाइडि को उसके सारे कपड़े पहना रखे थे ताकि उन्हें उठा कर ऊपर न ले जाना पड़े.*

कितनी गर्मी लग रही है! मैं बकरियों की तरह दौड़ और कूद नहीं सकती!

लेकिन जल्दी ही अच्छा लगने लगेगा!

अब मैं जितना चाहूँ कूद सकती हूँ, भाग सकती हूँ!

डेटि ने पीटर को कुछ पैसे दिए और वह वापस दौड़ कर कपड़े ले आया. वह फिर चढ़ने लगे. आखिरकार वह पहाड़ के ऊपर पहुँच गये जहां दादा जी बैठे नीचे घाटी की ओर देख रहे थे.
शुभ-संध्या, दादाजी.
अरे, यहाँ क्यों आई हो?

मैं आपकी पोती को लाई हूँ. जब तक मैं उसकी देखभाल कर सकती थी तब तक मैंने की. अब आप की बारी है!
और मैं इसकी देखभाल कैसे करूंगा?

वह आपको तय करना है. आप इसके दादा हैं. अगर इसके साथ कुछ बुरा हुआ तो वह आपकी गलती होगी!

फिर जाओ यहाँ से!
अलविदा!

*डेटि झटपट पहाड़ से नीचे उतर गई. कुछ करने को न था, इसलिये हाइडि अपने नये घर का चक्कर लगाने लगी.*
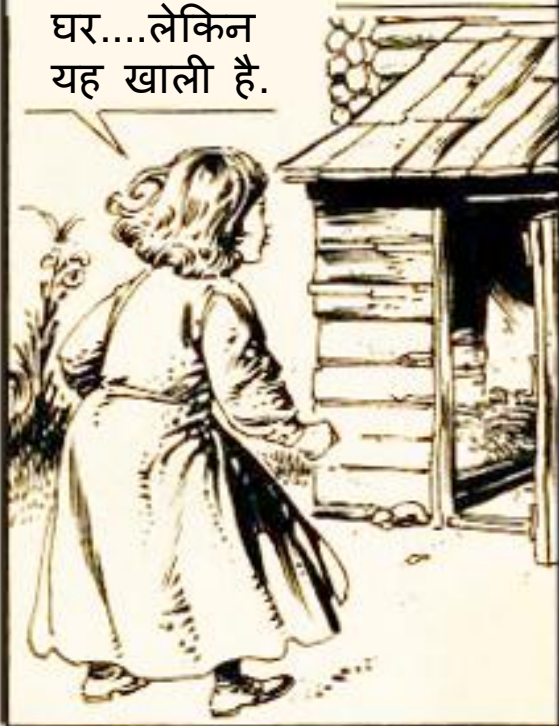
क्या चाहिये?

मैं घर देखना चाहती हूँ!

मैं बकरियों जैसे दौड़ना चाहती हूँ!
तुम चाहती हो तो ऐसा कर सकती हो. लेकिन पहले हमें यह कपड़े संभाल कर अलमारी में रखने हैं.

*अंदर आकर हाइडि ने सब ओर देखा.*
दादा जी, मैं कहाँ सोऊंगी?
जहां तुम्हारा मन करे.

*हाइडि सीढ़ी चढ़ कर लॉफ्ट पर आ गई, जहां सूखी घास पड़ी थी.*
मैं यहाँ सोऊंगी! यह सुंदर जगह है!

*दादा जी कंबल और चद्दर ले आये.*
अब मैं सोऊंगी!
पहले हम कुछ खायेंगे.

नीचे, दादाजी ने आग जलाई.
हाँ, मुझे भूख लगी है! मैं खाना तो भूल ही गई थी.

उन्होंने आग पर पनीर का एक बड़ा टुकड़ा पकाया.
मैं मेज़ पर चीज़ें सजाती हूँ!
ठीक है!

शीघ्र ही वह खाने बैठ गये.
कल मैं तुम्हारे लिये एक ऊँचा स्टूल बनाऊँगा. फिर तुम मेज़ पर बैठ पाओगी.
आप स्टूल बना सकते हैं, दादा जी? यह तो बहुत अच्छी बात है!

*उन्होंने हाइडि को कटोरे में बकरी का दूध दिया.*

*सीटी की आवाज़ सुन, हाइडि और दादा जी घर से बाहर आये. पीटर बकरियां वापस ला रहा था.*

हर सुबह पीटर हर एक की बकरियां ऊपर चरागाह में ले जाता है. शाम के समय घर वापस ले आता है.

दादा जी, इन में हमारी बकरियां भी हैं?

*खुशियों से भरे एक दिन का इस तरह अंत हुआ. अपने बिस्तर में हाइडि मज़े से सो गई. अगली सुबह सीटी की ज़ोरदार आवाज़ ने उसे जगाया.*
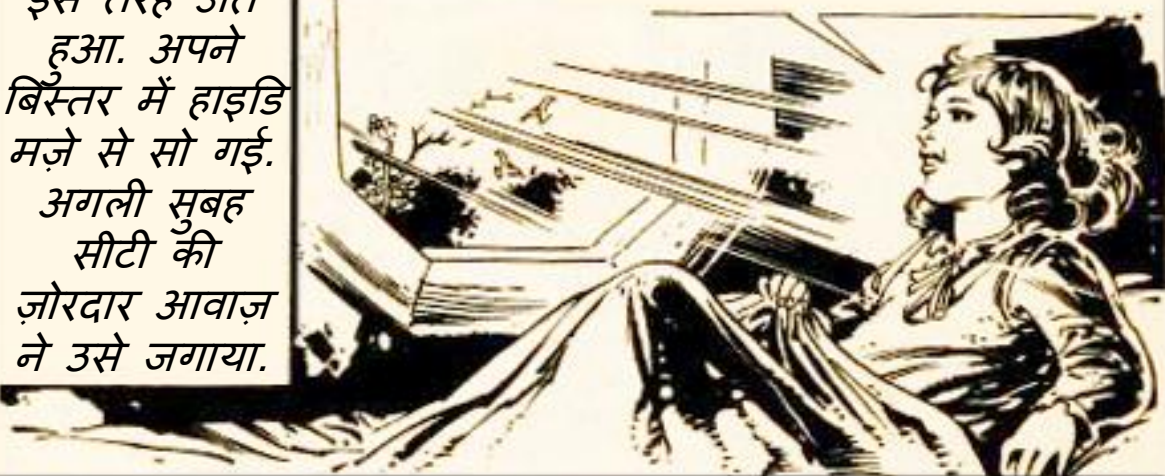
*वह तैयार होकर झटपट बाहर आई.*

उसे दो कटोरे बकरी का दूध भी देना.

और देखना, कहीं वह चट्टानों से गिर न जाए!

मैं उसका ध्यान रखूँगा.

वह पहाड़ के ऊपर चढ़ने लगे. बकरियां यहाँ-वहां भाग रहीं थीं. हाइडि भी वैसा ही कर रही थी.
बकरियों, यहाँ आओ! हाइडि, तुम कहाँ हो?
यहाँ!

यह फूल कितने सुंदर हैं! इनकी सुगंध कितनी मीठी है! मैं सब तोड़ लूंगी!
फिर कल यहाँ कोई फूल न होंगे.
हमें अभी बहुत ऊपर जाना है - वहां उन चोटियों तक.
ठीक है, अब मेरे पास बहुत फूल हैं.

अंत में वह चरागाह पहुँच गये.
यह सूरज, फूल, पहाड़ सब मुझे बहुत अच्छे लगते हैं. मैं इतनी प्रसन्न कभी न हुई थी.

ओह, पीटर! उठो!
वह देखो!

वह पक्षी कहाँ जा रहा है?
अपने घर, जो सबसे ऊंची चोटी पर है.

चलो, वहां चल कर उसका घर देखते हैं!
इतना ऊँचा तो बकरियां भी नहीं चढ़ सकतीं!
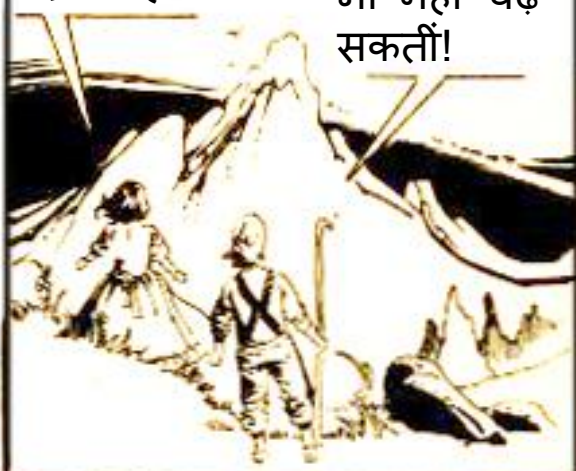
जल्दी ही खाने का समय हो गया.
बैठ जाओ और खाना खाओ. मैं तुम्हारे लिये दूध लाता हूँ.
ठीक है!

हाइडि ने दो कटोरे दूध पिया. फिर बहुत-सी ब्रेड और पनीर उसने पीटर को दी.
मैं बहुत खा चुकी हूँ. यह तुम खा लो.
क्या? मैं?
जीवन में पीटर को कभी भी इतना खाने को न मिला था.

खाना खाकर हाइडि बकरियों के पास आ गई.
मुझे इनके नाम बताओ.
उस अकड़ का नाम टर्क है, और वह लापरवाह ग्रीनफिंच है, और वह स्नोफ्लेक .......
बा..अ..अ..अ!

बेचारी स्नोफ्लेक! यह हर समय रोती क्यों रहती है?
इसका अपना कोई भी नहीं है. कल इसकी माँ को बेच दिया गया.
बेचारी स्नोफ्लेक! रोते नहीं, मैं हर दिन आऊंगी और तुम्हारी देखभाल करूंगी!

अचानक पीटर कूदा और दौड़ा. ग्रीनफिंच एक चट्टान से कूद रही थी.
हाइडि, जल्दी आओ और मदद करो!

हाइडि ने सुगंधित फूलों का एक गुच्छा उठाया.
ग्रीनफिंच आओ, तुम बहुत बुरी हो. अपनी टाँग तोड़ लोगी!

जैसे ही ग्रीनफिंच थोड़ा पीछे हुई, पीटर ने उसका कालर पकड़ लिया.
नहीं पीटर, उसे मत मारो!
इसकी पिटाई होनी ही चाहिये.

अगर मैं इसकी पिटाई न करूं तो क्या तुम कल मुझे थोड़ा-सा पनीर दोगी?
कल और उसके बाद हर दिन. लेकिन तुम्हें वचन देना पड़ेगा कि तुम किसी बकरी को नहीं मारोगे.

*दिन बीत गया. वह दोनों पहाड़ से नीचे आये. दादाजी उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे.*

*हर दिन हाइडि पीटर के साथ जाती. वह स्वस्थ व ताकतवर हो गई. फिर पतझड़ आया और ठंडी हवाएं चलने लगीं.*

*अगले दिन बर्फ गिरनी बंद हो गई.*

तुम बर्फ के छोटे-छोटे पहाड़ बना रही हो!

*कुछ दिन बाद घर में एक अतिथि आया.*

शुभ संध्या!

पीटर!

तो तुम स्कूल की पढ़ाई में व्यस्त हो?

हाँ, लेकिन पढ़ना-लिखना कठिन काम है!

स्कूल? मुझे उसके बारे में बताओ.

*जल्दी ही दादा जी ने नाश्ता बनाया. पीटर रुक गया और उसने भी खूब खाया. फिर उसके लौटने का समय आ गया.*

नाश्ते के लिये धन्यवाद! मैं अगले रविवार फिर आऊंगा. और हाइडि, मेरी दादी चाहती हैं कि तुम हमारे घर आकर उनसे मिलो.

तुम्हारी दादी मुझ से मिलना चाहती हैं? मैं मिलने आऊंगी!

*अगली सुबह........*

मुझे नीचे जाकर पीटर की दादी से मिलना चाहिये. वह मेरा रास्ता देख रही होंगीं.

आज बाहर बहुत ज़्यादा बर्फ़ है. तुम चल न पाओगी.

*हर दिन हाइडि दादा जी से पूछती. अंत में चौथे दिन......*

आज मुझे जाना ही होगा. पीटर की दादी मेरी प्रतीक्षा कर रही होंगी.

फिर आओ मेरे साथ.

*दादा जी एक स्लेज ले आये. हाइडि को उन्होंने भारी कम्बल में लपेट दिया. फिर स्लेज पर बैठ कर फिसलते हुए वह नीचे चले.*

ओह, दादाजी! हम पक्षियों की तरह उड़ रहे हैं!

*जल्दी ही वह पीटर के घर पहुँच गये.*

*जैसे ही दादा जी स्लेज को खींच कर ऊपर ले जाने लगे, हाइडि घर के अंदर चली गई.*

*पीटर की दादी बूढ़ी और अंधी थीं. आमतौर पर ऐसा कुछ न होता था जो उन्हें प्रफुल्लित करता.*

*पीटर की माँ ने उत्तर दिया.*

लेकिन मैं इसे सुन सकती हूँ, और अन्य आवाजें भी. यह घर अधिक मज़बूत नहीं है. किसी दिन यह गिर जाएगा और हमें दब जायेंगे.

काश आप देख पायें. मेरे दादाजी आपका घर ठीक कर देंगे और शायद आपकी आँखें भी.

नहीं बच्ची, वह मेरी आँखें ठीक नहीं कर सकते. पर तुम्हारी बात सुन कर अच्छा लगा. मेरे पास बैठो और मुझे अपने बारे में बताओ.

हाँ, मैं आपको और दादा जी के बारे में बताऊँगी और उन अनोखी चीज़ों के बारे में जो वो मेरे लिये बनाते हैं.

*हाइडि की बातों में पता ही न चला कि समय कैसे बीत गया. तभी दरवाज़ा खटकने की आवाज़ आई.*

स्कूल. पीटर पढ़ाई कैसी चल रही है?

पहले जैसी. मुझ से नहीं होती!

तुम बारह वर्ष के हो गये हो. क्या मैं आशा छोड़ दूँ?

आप क्या आशा कर रहीं थीं?

कि पीटर पढ़ कर मुझे भजन सुनायेगा. मेरी प्रार्थना की किताब में कई सुंदर भजन हैं. लेकिन वह उन्हें पढ़ नहीं पाता.

अगले दिन हाइडि और उसके दादा जी फिर पहाड़ के नीचे आये. दादा जी घर को बाहर से ठीक करने लगे.

घर के अंदर.....
आखिरकार वही हुआ जिसका मुझे डर था, घर गिर रहा है!
नहीं, नहीं! यह तो दादा जी घर को ठीक कर रहे हैं!

क्या यह सच है ब्रिजेटा?
हाँ, सच है. और मैं नहीं जानती कि क्या कोई और हमारे लिये यह सब करता?
हाइडि के दादा जी ने उस छोटे घर को ठीक कर दिया. अब तूफ़ान आने पर दादी को डर न लगता था. हाइडि के आने पर वह बहुत प्रसन्न होतीं थीं. वह उत्सुकता से उसके आने की प्रतीक्षा करती थीं.

सर्दीयाँ जल्दी ही बीत गईं. कई वर्ष भी बीत गए. अब हाइडि आठ वर्ष की थी. एक दिन जब वह बाहर खेल रही थी एक अजनबी वहां आये.

तुम ही हाइडि हो जिसके बारे में मैंने सुन रखा है! तुम्हारे दादा जी कहाँ हैं?
वह अंदर लकड़ी के चम्मच बना रहे हैं.
वह डौरफ्लि के पादरी थे. कई वर्ष पहले वह दादा जी के मित्र और पड़ोसी थे.

शुभ दिवस मित्र, बहुत समय से हम मिले नहीं.
हाँ, यह सच है.

मैं तुम से बात करने आया हूँ. स्कूल-मास्टर ने तुम्हें पत्र भेजे हैं.
हाइडि, बकरियों के लिये थोड़ा नमक ले जाओ. जब तक मैं नहीं आता वहीं रुकना.

हाइडि बाहर चली गई. दोनों बातें करने लगे.
लड़की को दो साल पहले ही स्कूल जाना चाहिये था! तुम उसके लिये क्या सोचे बैठे हो?
मैं चाहता हूँ कि वह यहाँ बकरियों और पक्षियों के साथ ही बड़ी हो और प्रसन्न रहे. उनसे वह कुछ भी गलत न सीखेगी.

लेकिन हाइडि कोई पशु तो नहीं है. उसे मूर्ख नहीं बनना. अगली सर्दियों में उसे स्कूल आना ही होगा.
क्या मैं ठंड में उसे बर्फ और आंधी के बीच पहाड़ के नीचे हर सुबह स्कूल भेजूं? फिर तूफ़ान का सामना करते हुए रात में वह घर लौटे?

नहीं, नहीं! तुम्हें फिर से नीचे गाँव में आकर रहना होगा.
मैं ऐसा नहीं करूंगा! लोग मुझे से नफरत करते हैं और मैं उनसे नफरत करता हूँ!

हाथ मिलाओ और वादा करो कि तुम आओगे और फिर से हमारे साथ रहोगे!
मैं जानता हूँ आप मेरा भला चाहते हैं. लेकिन न मैं हाइडि को स्कूल भेजूँगा और न ही मैं गाँव में रहूँगा.

फिर अलविदा, अगर तुम कानूनी पचड़े में फंस गये तो मुझे अच्छा नहीं लगेगा.

पादरी चला गया. फिर दो दिन बाद एक और अतिथि आया.
हाइडि कितनी अच्छी लग रही है. आप ने इसकी खूब देखभाल की है. मैं जानती हूँ इसके कारण आप बहुत परेशान रहे हैं ...पर अब और नहीं!
हाँ!

फ्रैंकफर्ट में एक धनी परिवार में एक बच्ची है, इकलौती बेटी, व्हीलचेयर पर ही रहती है.

उन्हें लड़की चाहिये जो उनकी बेटी के साथ मित्र की तरह रहे. वह हाइडि को लेना चाहते हैं.

उसके लिये यह एक उत्तम अवसर है. आप को खुश होना चाहिये.

हाइडि की देखभाल करना मेरा फर्ज़ है. आप उसे स्कूल नहीं भेजते, चर्च नहीं भेजते! इस बात पर नियम-कानून मेरे साथ हैं!
निकलो यहाँ से! अपनी हैट उठाओ और जाओ! मैं तुम्हें दुबारा देखना भी नहीं चाहता!

दादा जी दनदनाते हुए घर से बाहर चले गये. डेटि हाइडि की ओर घूमी.
तुम्हारे कपड़े अलमारी में हैं? जल्दी से सब इकट्ठा करो!
मैं नहीं जाऊँगी! आपने दादाजी को नाराज़ कर दिया है!
तुम्हें फ्रैंकफर्ट अच्छा लगेगा. ऐसा न हुआ तो तुम वापस आ जाना. तब तक उनका गुस्सा भी उतर जायेगा.
क्या हम शाम को घर लौट आयेंगे?
जब तुम्हारा मन करे तुम वापस आ सकती हो! हम ट्रेन में बैठ कर जायेंगे. वह आंधी की तरह चलती है.
जल्दी ही वह दादी के घर के पास पहुँच गए.
तुम कहाँ जा रही हो, हाइडि?
थोड़े समय के लिये फ्रैंकफर्ट जा रही हूँ!
डेटि! बच्ची को हम से दूर न ले जाओ, डेटि!

जब हाइडि ने दादी की आवाज़ सुनी तो वह हाथ छुड़ाकर जाने लगी.
मुझे जाने दो! मुझे दादी के पास जाना है!
नहीं, हमारी ट्रेन छूट जायेगी. जब तुम वापस आओगी तो उनके लिये कोई सुंदर सा उपहार ले आना.

हो सकता हैं उन्हें नर्म सफेद ब्रेड अच्छी लगती हो.
हां! वह काली सख्त ब्रेड नहीं खा पातीं! जल्दी चलो!

दो दिन बाद फ्रैंकफर्ट में क्लेरा सिसिमान अपने कोच पर लेटी थी. उसकी माँ का निधन हो चुका था. पिता अपने काम के कारण घर से बाहर रहते थे. मिस रोटनमायर, हाउसकीपर ही उसकी देखभाल करती थी.
क्या उनके आने का समय नहीं हुआ, मिस?
एक गाड़ी की आवाज़ सुनाई दी है.

शीघ्र ही दो लोग कमरे के अंदर आये.
तो यह है वह बच्ची. तुम्हारा नाम क्या है?
हाइडि!

हाइडि तो असली नाम न होगा. जब तुम पैदा हुई तो तुम्हारा क्या नाम रखा गया था?

मुझे याद नहीं.

क्या यह बच्ची मंद-बुद्धि है?

ओह, नहीं! इसे शिष्टाचार नहीं आता. लेकिन यह सीखने को तत्पर है!

और मैंने कहा था कि मुझे क्लेरा के समान आयु वाली लड़की चाहिये जो उसके साथ पढ़ाई भी कर सके. इसकी आयु कितनी है?

बस दस साल से थोड़ी छोटी है.

दादा जी कहते हैं कि मैं आठ साल की हूँ.

चार साल छोटी! और तुमने क्या-क्या सीखा है? कौन-सी किताबें तुमने पढ़ी हैं, हाइडि?

कोई भी नहीं. मैंने पढ़ना नहीं सीखा, मैंने कुछ भी नहीं सीखा.

आपने कहा था की आपको ऐसी लड़की चाहिये जो सबसे अलग हो. यह वही है. अब मुझे जाना होगा! मैं शीघ्र ही दुबारा आऊंगी और देखूंगी सब कैसा चल रहा है.

नहीं, रुको!

*डेटि झटपट सीढ़ियों से नीचे आ गयी. मिस रोटनमायर उसके पीछे आई.*

*इस बीच.......*

मुझे बहुत ख़ुशी है कि तुम यहाँ हो! तुम साथ रहोगी तो पढ़ने में मज़ा आयेगा!

लेकिन मैं कल वापस चली जाऊँगी, दादी का उपहार लेकर.

डेटि चली गयी है. यह बच्ची तो वैसी नहीं है जैसी मैं चाहती थी. अब क्या करूं?

*बटलर सेबेस्टियन ने कहा कि खाना तैयार था. वह क्लेरा की व्हीलचेयर के मेज़ के पास ले आया.*

हेलो, आप पीटर जैसे दिखते हैं!

कैसी लड़की है? नौकर से ऐसे बात कर रही है जैसे कि वह कोई मित्र हो!

*सेबेस्टियन ने खाना दिया.*

*हाइडि ने एक रोल उठा कर अपनी जेब में रख लिया.*

*मिस रोटनमायर ने हाइडि को समझाया कि उसे खाना कैसे लेकर खाना चाहिए.*

*लेकिन लंबी यात्रा के कारण हाइडि बहुत थक चुकी थी.*

*अगली सुबह हाइडि एक अनोखे कमरे में जागी.*

*तैयार हो कर वह एक खिड़की से दूसरी खिड़की भागने लगी.*

यह खुल नहीं रही! मैं आकाश, सूरज और पहाड़ों को कैसे देखूँगी?

*हाइडि ने बहुत कोशिश की पर खिड़की खुली ही नहीं.*

*जल्दी उसे नाश्ते के लिये बुलाया गया. फिर उसे क्लेरा के पास पढ़ने के लिये भेजा गया.*

यहाँ से बाहर कोई कैसे देख सकता है? खिड़कियाँ खुलती ही नहीं.

तुम और मैं नहीं खोल सकतीं. लेकिन सेबेस्टियन खोल सकता है. उसे कहो!

*पाठ शुरू किया. फिर अचानक.....*

हे भगवान! उसी लड़की ने किया होगा?

यह अचानक हो गया! जब उसने बाहर गाड़ियों की आवाज़ सुनी तो वह कूद कर कमरे से बाहर भागी थी.

मिस रोटनमायर झटपट नीचे गई. वहां हाइडि प्रवेश-द्वार के पास खड़ी थी.
क्या हुआ? क्यों इतना उत्पात मचा दिया?
मैंने सदाबहार पेड़ों में तेज़ हवा की आवाज़ सुनी थी. लेकिन यहाँ तो कुछ भी नहीं है.

वह पढ़ने के कमरे में वापस आ गये.
देखो, तुम ने क्या किया है! पढ़ाई के समय चुपचाप बैठा करो, नहीं तो मैं तुम्हारे हाथ कुर्सी के साथ बाँध दूंगी.
अब मैं ऐसा नहीं करूंगी. मुझे पता नहीं था की ऐसा भी नियम है.

खाना खाने के बाद क्लेरा आराम करती थी. हाइडि के पास कोई काम न था. वह सेबेस्टियन के पास आई.
क्या आप मेरे लिए एक खिड़की खोल सकते हैं?

अवश्य, ऐसे खोलते हैं!

पत्थरीले रास्ते के अतिरिक्त बाहर कुछ भी नहीं है!
हर खिड़की से बाहर ऐसा ही दिखाई देगा.

लेकिन सारी घाटी को कहाँ से देख सकती हूँ?
उसके लिए आपको किसी ऊंचे टॉवर पर चढ़ना पड़ेगा, जैसे की वो चर्च का टॉवर जिस पर सोने का कलश लगा है.

वह टॉवर इतना निकट दिखाई दे रहा था कि हाइडि वहां जाने के लिये बाहर रास्ते पर दौड़ने लगी. पर जल्दी ही वह खो गयी और हर कोई हड़बड़ी में लग रहा था.
कृपया आप मुझे बता सकते हैं.....

फिर उसे एक लड़का दिखाई दिया.
जिस चर्च में ऊँचा टॉवर है क्या उसका रास्ता बता सकते हो?
हाँ, दो पेन्स देने पड़ेंगे!

मेरे पास पैसे नहीं हैं लेकिन क्लेरा अवश्य दे देगी.
फिर आओ मेरे साथ!

यह क्या शरारत है? जो लोग टॉवर के ऊपर जाना चाहते हैं, यह घंटी उन्हीं के लिये है.

लेकिन मैं जाना चाहती हूँ! कृपया मुझे ऊपर ले जाएँ!

बूढ़े आदमी ने हाइडि की बात मान ली.

*लेकिन प्रवेश-द्वार पर....*

*और कुछ ही पलों में....*

क्या? बिल्ली के बच्चे? सेबेस्टियन! इन्हें बाहर ले जाओ!

मिस रोटनमायर इनसे डरती हैं. सेबेस्टियन, तुम को इनके लिये ऐसी जगह बिस्तर बनाना होगा जहां वह देख न पायें.

मैं ऐसा ही करूंगा, मिस क्लेरा.

सेबेस्टियन स्टडी-रूम में गया.
एक लड़का आया है. वह मिस क्लेरा से बात करना चाहता है.
ओह! उसे भीतर ले आओ!
लड़का आया. आते ही अपना यंत्र बजाने लगा.
यह शोर बंद करो, अभी!

अगले ही पल लड़के का कछुआ निकल कर भागा.
उन्हें बाहर ले जाओ!
लड़के ने अपना कछुआ उठाया और सेबेस्टियन ने उसे बाहर का रास्ता दिखाया. यंत्र बजाने के लिए उसे पैसे भी दिए.

कुछ देर तक स्टडी-रूम में खामोशी रही. फिर दरवाज़े की घंटी बजी.
कोई यह टोकरी लाया है. उसने कहा, इसे तुरंत मिस क्लेरा को देना.
मेरे लिये?
इसे नीचे रखो. पहले अपनी पढ़ाई पूरी करो!
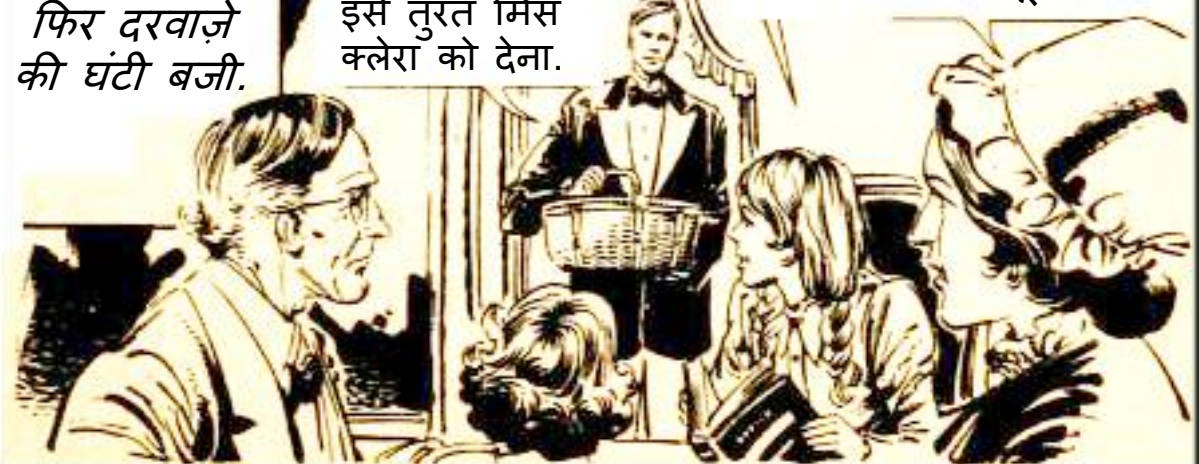
अचानक टोकरी उलट गई. और हर तरफ बिल्ली के बच्चे दौड़ने लगे.
छोटे-छोटे प्यारे से! देखो हाइडि!
सेबेस्टियन! मदद करो!

जब से हाइडि आई थी, क्लेरा कभी भी बोर न होती थी. लेकिन मिस रोटनमायर अकसर गुस्सा हो जाती थी.
यह लड़की तो पूरी जंगली है! इसे सज़ा मिलनी चाहिए!
नहीं, मिस! पापा जल्दी ही घर आयेंगे. वही बताएँगे कि बिल्ली के इन बच्चों का क्या किया जाए!

लेकिन घर से दूर होने के कारण हाइडि उदास होती जा रही थी.
वसंत ऋतु आने वाली है! घास हरी-भरी हो जायेगी, फूल खिलेंगे.
सब बहुत सुंदर होता है!

कल मुझे अपने घर जाना ही होगा!
पापा की प्रतीक्षा करो. वह बताएँगे कि क्या करना है.

*हाइडि के लिए सहन करना कठिन हो गया. डेटि ने कहा था कि जब उसका मन करे वह घर लौट सकती थी.*

जो सफेद नर्म रोल मैंने दादी के लिये बचा कर रखे हैं उन्हें साथ ले जाऊँगी.

मैं अपनी पुरानी हैट पहन कर जाऊँगी ताकि दादी मुझे पहचान सकें.

*लेकिन वह प्रवेश-द्वार तक पहुंची भी न थी कि मिस रोटनमायर मिल गई.*

यह क्या हो रहा है? क्या भिखारियों जैसे कपड़े पहन कर बाहर जाओगी?

मुझे घर जाना है! स्नोफ्लेक रो रही होगी. दादी मेरी प्रतीक्षा कर रही हैं. पीटर ग्रीनफिंच की पिटाई कर देगा!

कितनी बुरी लड़की है! यह बासी ब्रेड और इसकी हैट ले लो और कचरे में डाल दो!

नहीं, नहीं! मुझे अपनी हैट चाहिए और वह रोल दादी के लिये हैं!

*उस दिन पहली बार, हाइडि रोने लगी.*

वह रोल मैंने दादी के लिये बचाए थे. वह सारे कचरे में डाल दिये! ओह, ओह!

हाइडि, रोओ नहीं! जब तुम घर जाओगी तो मैं तुम्हें इतने ही या इनसे भी अधिक ताज़ा रोल दूंगी.

*हाइडि को अच्छा लगने लगा. बाद में अपने सिरहाने के नीचे एक चीज़ मिली.*

*जब मिस्टर सिसिमान घर लौटे तो उन्हें अलग-अलग बातें सुनने को मिलीं.*

मिस्टर सिसिमान को फिर से तुरंत ही जाना था. जाने से पहले उन्होंने मिस रोटनमायर को कहा.

फिर उन्होंने क्लेरा से बात की.

और जिस दिन वह गये उसके अगले दिन दादी आ गयीं.

दुपहर बाद दादी ने हाइडि को बुलवाया.

शीघ्र ही एक आश्चर्यजनक बात हुई.
जब मैंने आशा छोड़ दी थी तभी एक ही रात में इसने पढ़ना सीख लिया.
जीवन में अनोखी बातें होती रहती हैं.
क्लेरा, मैं जानती हूँ यह क्या लिखा है!
उस दिन से हाइडि की पढ़ने में खूब मज़ा आने लगा.

दादी ने अपनी बात निभाई.
अब यह किताब तुम्हारी है!
मेरी, हमेशा के लिये?

किताब की वह तस्वीर उसे पसंद थी जिसमे छोटे जानवर घास चर रहे थे. पर वह तस्वीर देख कर घर की याद उसे और भी सताने लगी.
मुझे बताओ, तुम्हें क्या बात परेशान कर रही है?
मैं किसी की नहीं बता सकती!

जिस दिन हाइडि ने घर जाने की कोशिश की थी उसी दिन वह समझ गई थी कि अपनी इच्छा के अनुसार वह घर नहीं जा सकती थी.
जब हम कठिनाई में हों और किसी को बता ना सकते हों तो उस समय हमें ईश्वर से सहायता के लिये प्रार्थना करनी चाहिये.
मैं प्रयास करूंगी.
कुछ समय के लिये हाइडि प्रसन्न दिखाई दी. लेकिन जैसे ही दादी के लौटने का समय निकट आया तो वह फिर उदास हो गई.

*जल्दी ही दादी भी चली गईं. कई सप्ताह बीत गये. हाइडि जानती ही न थी कि सर्दीयाँ थीं या गर्मियाँ. रात में स्वप्न में उसे पहाड़ दिखाई देते और वह रो पड़ती. वह खा भी न पाती.*

*इस बीच घर में अजीब घटनायें हो रहीं थीं. मिस रोटनमायर ने मिस्टर सिसिमान को पत्र लिखा.*

डरावनी बातें हो रही हैं. डर के मारे मैं लिख नहीं पा रही. क्लेरा डरी हुई है....कोई भूत होगा. आप शीघ्र लौट आयें.

*हर रात को प्रवेश-द्वार पर ताला लगाया जाता था.....*

*हर सुबह दरवाज़ा खुला मिलता.....*

*इस कारण मिस्टर सिसिमान झटपट घर वापस आये.*

क्या यह कोई मज़ाक है जो नौकर मिस रोटनमायर के साथ कर रहे हैं?

नहीं, श्रीमान! हम सब भी भयभीत हैं!

फिर अभी मेरे मित्र, डॉक्टर, के पास जाओ. उन्हें कहो कि आज रात वह मेरे साथ जागेंगे. हम पता लगायेंगे कि यह सब क्या है.

जी, श्रीमान!

*डॉक्टर आये तो मिस्टर सिसिमान ने उन्हें सारी बात बताई.*

*दोनों मित्र बातें करते रहे. रात के बारह बज गये, फिर एक. अचानक....*

*वह दोनों हॉल के अंदर गए. प्रवेश-द्वार के पास कोई खड़ा था.*
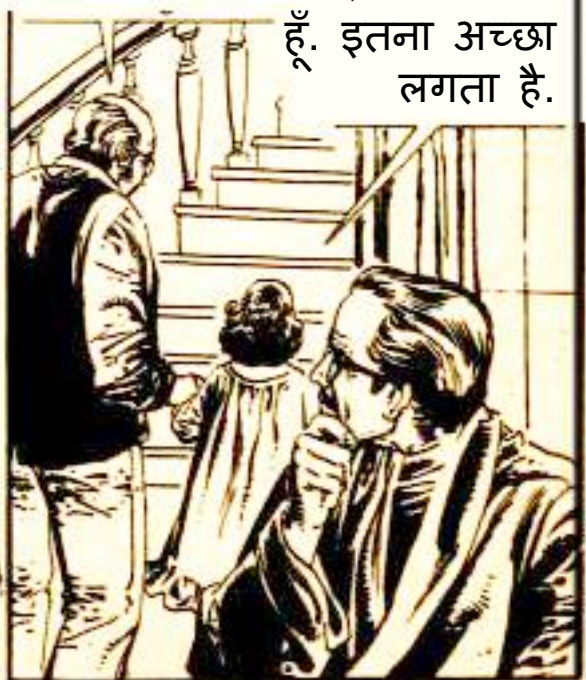
लेकिन जब मैं जागती हूँ तो मैं यहीं पर होती हूँ!
तुम्हें कोई दर्द नहीं होता और तुम रोती भी नहीं. तुम हर समय दुःखी रहती हो! मैं समझ गया.
अब थोड़ा रो लो, बच्ची. फिर सो जाना. कल सब ठीक हो जाएगा.
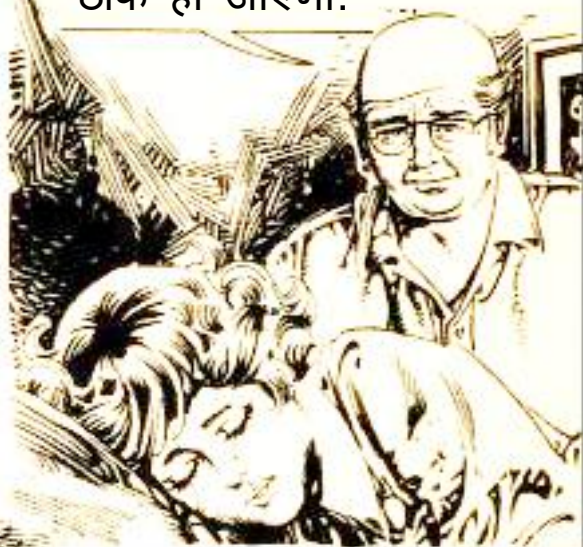
डॉक्टर नीचे आया.

बच्ची नींद में चलती है. वह वो भूत है जिसने घर के सब लोगों को डरा दिया है.

वह बहुत कमज़ोर हो गयी है. घर की याद में मरी जा रही है. इसका बस एक ही इलाज है. उसे कल ही अपने घर जाना होगा!

जल्दी ही भोर हो गई. मिस्टर सिसिमान ने नौकरों को जगाया. मिस रोटनमायर ने सेबेस्टियन को बुलाया.
यात्रा के लिये तैयार हो जाओ. तुम हाइडि को उसके घर ले जाओगे. मैं उसके दादा के लिये तुम्हें एक पत्र दूँगा.
ओह! ठीक है, श्रीमान.

हाइडि को यह बात बता दी गई वह तैयार होकर क्लेरा के पास आई.
मैं कई तरह के कपड़े और चीजें तुम्हारे संदूक में रख रही हूँ. और दादी के लिये एक दर्जन ताज़ा सफेद नर्म रोल यह रहे.
ओह, क्लेरा! मैं जाग रही हूँ या सपना देख रही हूँ?

तुम बहुत याद आओगी! लेकिन पापा ने कहा है कि अगली गर्मियों में मैं तुम्हें मिलने जा सकती हूँ!
ओह, सच!

जाने का समय आया तो हाइडि ने वह सब चीजें ले लीं जो उसे पसंद थीं.
तुम्हारी यात्रा सुखद हो! हमें भूल न जाना!
आपका धन्यवाद. मेरे लिये डॉक्टर को भी धन्यवाद कहें!

हाइडि और सेबेस्टियन ने ट्रेन में कई घंटे बिताये. रात वह एक होटल में रुके. अंत में वह मायनफेल्ड पहुंचे.
क्या इस लड़की और उसके संदूक को डौरफ्लि और फिर ऊपर पहाड़ पर ले जाने का कोई सुरक्षित तरीका है?
मैं ले जाऊँगा. यहाँ के सब रास्ते सुरक्षित हैं!
डौरफ्लि से मैं अकेले भी जा सकती हूँ!

यह पत्र है तुम्हारे दादा जी के लिए और यह उपहार मिस्टर सिसिमान ने भेजा है. इन्हें संभाल कर अपनी टोकरी में रख लो.

मैं इन्हें नहीं खोऊंगी.

*उसने उठा कर हाइडि को सीट पर बैठा दिया और गाड़ी चल पड़ी.*
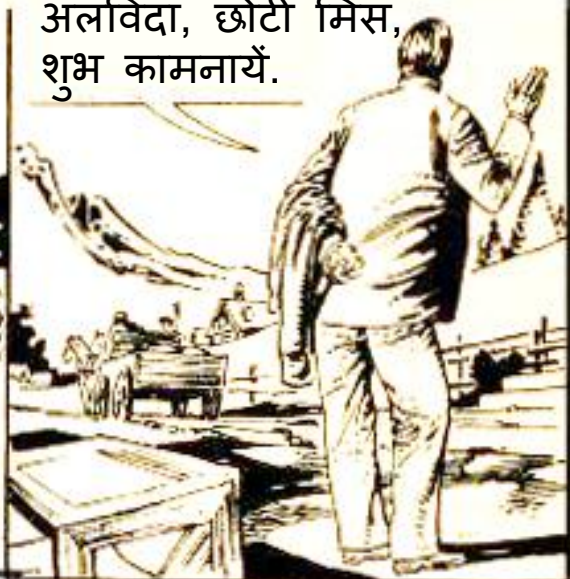
अलविदा, छोटी मिस, शुभ कामनायें.

*वह ऊंचे पहाड़ पर जल्दी-जल्दी चढ़ने लगी. उसका दिल तेज़ी से धड़क रहा था. कुछ देर बाद वह दादी के घर पहुंची.*

वह भीतर भागी और सब कुछ ठीक था.
क्या सच में तुम आई हो, हाइडि?
मैं घर आ गई हूँ और मैं हर दिन आपसे मिलने आऊंगी. मैं आपके लिये ताज़ा नर्म ब्रेड लेकर आई हूँ!

जल्दी ही पीटर की माँ भी आ गई.
हाइडि! इस सुंदर ड्रेस और हैट में तो मैं तुम्हें पहचान ही न पाई.

उसी समय हाइडि ने अपनी सुंदर ड्रेस उतार दी और अपनी पोटली खोल ली.
यह आप रख लें. दादा जी के पास मैं ऐसे ही जाना चाहती हूँ वरना वह मुझे पहचान ही नहीं पायेंगे.

हाइडि पहाड़ पर चढ़ती गई. उसने अस्त हो रहे सूर्य के प्रकाश में चमकती बर्फीली चोटियाँ देखीं. उसने नीचे सुनहरी घाटी देखी, सदाबहार पेड़ देखे. उसने अपना घर ...और दादा जी को देखा.
ईश्वर की कृपा है, मैं घर पहुँच गई!

बाद में उसने पत्र और उपहार दादा जी को दिए.

और उसने ऐसा ही किया.

जल्दी वह पीटर और बकरियों से मिली.

हाइडि अब ठीक से खाना खाने लगी.

और दादी को पढ़कर भजन सुनाने लगी!

एक दिन उसने दादा जी से ईश्वर बात की.

शायद तुम सही हो.
ओह, हाँ!

अगले रविवार की सुबह, दादाजी ने हाइडि को चौंका दिया.

चलो हाइडि, दिन निकल चुका है. हम चर्च जायेंगे!

वह पहाड़ से नीचे गाँव आये और चर्च के अंदर गये. लोग भजन गा रहे थे.
देखो! देखो कौन आया है?

प्रार्थना के बाद दादाजी पादरी के घर गए.
मैं यह कहने आया हूँ कि जो कुछ मैंने आपसे हमारी पिछली भेंट में कहा था उसे भूल जाएँ. आप सही थे और मैं गलत.

जैसा आपने कहा था, सर्दियों में मैं डौरफ्लि में एक घर किराए पर लूंगा.
तुम्हारा स्वागत किया जाएगा. तुम प्रिय मित्र और पड़ोसी हो.

दादाजी ने बड़े प्रेम से स्वागत किया. मेहमानों को वहां का दृश्य सुंदर लगा. फिर वह खाने बैठे.

क्या तुमने सच में दूसरा पनीर का टुकड़ा खाया, क्लेरा?

इतना स्वादिष्ट खाना मैंने कभी नहीं खाया!

यहाँ की हवा का प्रभाव है!

शाम हो गई.

क्लेरा, अब हमें गाँव लौट जाना चाहिये.

दादी, यहाँ इतना कुछ है जो मैंने अभी नहीं देखा. मैं हाइडि का बिस्तर देखना चाहती हूँ!

वह भीतर गए. दादा जी क्लेरा को उठा कर लॉफ्ट पर ले आये.
इससे अच्छा बिस्तर मैंने आजतक नहीं देखा! सोने के लिये कितनी आरामदायक जगह है!
अगर क्लेरा कुछ दिन यहाँ रुक जाए तो वह तगड़ी हो जायेगी. क्या आपको ऐसा नहीं लगता?

मेरे मन में भी यह बात आई थी, पर आपको परेशानी होगी.
चिंता न करें, मैं बच्ची की अच्छी देखभाल करूंगा.
क्या मैं सच में यहाँ रुक सकती हूँ?
दादी मान गईं. क्लेरा के लिये भी एक बिस्तर लगा दिया गया. दादी ने कहा कि बीच-बीच में आकर वह उससे मिलती रहेंगी.
बहुत सुन्दर!

तीन सप्ताह बीत गये. क्लेरा कभी इतने अच्छे से न सोई थी, न ही इतना अधिक उसने कभी खाया था. लेकिन हर दिन दादा जी उसे एक काम करने को कहते थे.
मैं तुम्हें पकड़ कर रखूँगा, तुम एक या दो मिनट अपने पाँव पर खड़े होने की कोशिश करो.
हाँ, लेकिन दर्द होता है!

*एक दिन उन्होंने तय किया कि बकरियों के साथ वह पहाड़ के ऊपर जायेंगे. सूर्योदय के समय पीटर आ गया.*

पूरी गर्मी में हाइडि एक बार भी मेरे साथ ऊपर नहीं आयी. व्हीलचेयर पर बैठी उसकी मित्र सदा उसके साथ रहती है. मुझे इस कुर्सी से नफरत है.

*पीटर ने गुस्से में उस व्हीलचेयर को एक धक्का मारा और वह पहाड़ से नीचे जा गिरी.*

*पीटर को समझ न आया कि अब क्या करे, वह पहाड़ पर ही घूमता रहा.*

*जब दादा जी को व्हीलचेयर कहीं दिखाई न दी तो वह समझे कि आंधी ने उड़ा कर उसे पहाड़ से गिरा दिया होगा. वह क्लेरा को उठा कर पहाड़ के ऊपर ले आये.*

*हाइडि चाहती थी कि क्लेरा चरागाह के अतिरिक्त अन्य चीज़ें भी देखे.*

क्लेरा तुम्हें वह फूल देखने के लिये आना ही पड़ेगा. पीटर! यहाँ आओ!

*इससे पहले कि वह कुछ समझ पाती, क्लेरा अपने पाँव पर खड़ी थी.*

मैं चल सकती हूँ! देखो, देखो! मैं सब की तरह चल सकती हूँ!

अपने पाँव नीचे रखो.

*जहां तक पीटर की बात थी......*

तुम ही वह आंधी हो जो क्लेरा की व्हीलचेयर उड़ा कर ले गई थी. तुमने चलने में उसकी सहायता की. मैं तुम्हें क्या दूँ?

सिर्फ एक पैनी?

हर सप्ताह तुम्हें एक पैनी मिलेगी- जीवनभर!

धन्यवाद!

हाँ, सब कुछ ठीक हो गया!

अंत